शिक्षा सिर्फ रोजगार के लिए नहीं है। शिक्षा संवर्धन, सशक्तिकरण, ज्ञानोदय के लिए है
- माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम वैंकैया नायडू

कनेक्ट

वर्ष.- 5, अंक-3 मार्च 2019

"नई तालीम - शिक्षक अधिगम में अनुभवजन्य शिक्षा" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

28 फरवरी को एमजीएनसीआर में नई तालीम-अनुभवजन्य शिक्षा पर दो दिवसीय गहन सम्मेलन में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम. वैंकैया नायडू बोलते हुए

"नई, तालीम - शिक्षक अधिगम में अनुभवजन्य शिक्षा" विषय पर दिनांक 27 से 28 फरवरी 2019 तक, दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन, एमजीएनसीआरई द्वारा डॉ. मर्री चेन्ना रेड्डी मानव संसाधन विकास (एमसीआरएचआरडी) संस्थान हैदराबाद में आयोजित किया गया था । जिसमें विभिन्न एससीईआरटी के प्रतिभागी, विश्वविद्यालय शिक्षा विभाग के प्रमुख और देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक शामिल हैं। मुख्य अतिथि, महामहिम, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम.वैंकैया नायडू जी ने अपने संबोधन में एमजीएनसीआरई की शिक्षा पहल पर अपनी अपार संतुष्टि व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि शिक्षा को समाज के लैंगिक रूढ़ियों को दूर करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। श्री. नायडू ने ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ाने के लिए एमजीएनसीआरई के कदमों की सराहना करते हुए कहा कि गांधीजी ने जिस ग्रामीण परिवर्तन का सपना देखा था, उस में शिक्षा को जोड़ना भी एक प्रमुख तत्त्व था । उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि ग्रामीण-शहरी विभाजन और ग्राम स्वराज के गांधीवादी आदर्श जैसे पहलुओं को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए। ग्राम राज्य के बिना राम राज्य अधूरा है। उन्होंने महत्त्वपूर्ण बात यह कहीं कि यदि आधी आबादी आर्थिक विकास में सार्थक योगदान देने में सक्षम नहीं है, व्यक्तिगत पूर्ति और आजीविका के विकास के लिए अवसर नहीं दिए जाते हैं तो राष्ट्र केवल अपनी पूर्ण क्षमता का एहसास नहीं कर सकता है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का उद्धरण देते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि गरीबी पर काबू पाने के मिशन के साथ ग्रामीण-शहरी विभाजन को निकटता से जोड़ा गया था। श्री. नायडू के भाषण के अंश - "नई तालीम, वस्तुतः 'नई शिक्षा', बुनियादी शिक्षा के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण समग्र एक है । जहाँ व्यक्ति के सभी पहलुओं- बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक - एक पाठ्यक्रम में मिलाये जाते है। यह काम को हाथों से सीखने को एकीकृत करता है, जो युवा लोगों को "वास्तविक" दुनिया और आसपास के समुदाय से अलग करने के बजाय दुनिया में उनके जीवन के लिए तैयार करता है तथा उन्हें सुसज्जित भी करता है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि नई तालीम पर चर्चा करने के लिए कुलपति, कई विश्वविद्यालयों के विभागाध्यक्ष और शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण की राज्य परिषदों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं। यह ध्यान में रखते हुए प्रशंसा की बात यह है कि इस सम्मेलन का उद्देश्य कौशल भारत जैसे सर्वोत्कृष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से भारत सरकार के विभिन्न स्तरों पर भारतीय समाज के कौशल के समकालीन प्रयास के साथ पूरक है। दुनिया के ग्रामीण इलाकों में खुले संसाधनों और क्षमता, मेहनती युवक और पारंपरिक कौशल हैं। उन्हें मूल्य-वर्धक उद्यम बनाने में पोषण करना होगा जो सशक्तिकरण का वातावरण बनाएंगे। प्रकृति के प्रति सम्मान और एक सौंदर्य की प्रशंसा को हमारी शिक्षा प्रणाली में फिर से लाना होगा। यह गांधीजी की दृष्टि से जोड़ता है कि 'प्रकृति मनुष्य की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है लेकिन उसके लालच के लिए नहीं'।

इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति ने एमजीएनसीआरई के द्वारा संकलित किए गये 'ग्रामीण प्रबंधन - सिद्धांत और कार्य प्रणाली' पुस्तक का लोकार्पण किया

देश के केंद्रीय एवं राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और शिक्षा विभाग के अध्यक्षों के साथ बातचीत करते हुए माननीय उपराष्ट्रपति

गांधीजी का मानना था कि शिक्षा से बच्चों को आवश्यक मूल्य भी सिखने चाहिए, विशेष रूप से स्वच्छता और व्यक्तिगत स्वास्थ्य विज्ञान के मूल्य। यह एक स्वच्छ भारत की उनकी दृष्टि है जिसने स्वच्छ भारत मिशन को बड़े पैमाने पर एक जन आंदोलन की प्रेरणा दी। गाँधीजी ने कहा था कि- राजनीतिक स्वतंत्रता की तुलना में स्वच्छता अधिक महत्वपूर्ण है । गाँव में जीवन जीने की शैली अलग है और हमें गाँव के जीवन को समझना चाहिए।

नई तालीम को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। शिक्षा बदल रही है और हमें ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है, जो तेजी से विकसित हो रहे अधिगम के माहौल के अनुकूल बन सकें। एक सच्ची शिक्षा किसी के दिमाग को खोलती है और किसी को गंभीर, व्यावहारिक और रचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रशिक्षित करती है। यह पारस्परिक कौशल को बढ़ावा देता है और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करता है। यह सहानुभूति,दया और विनम्रता को प्रोत्साहित कर देता है। शिक्षा अपने सबसे अच्छे रूप में इंसान को बेहतर से बेहतर सक्षम बना देती है । शिक्षा हम में से हर एक को अधिक सोचने के लिए और हर एक को अधिक भावुक व्यक्ति बनाती है। गांधीजी द्वारा इसकी समग्र परिप्रेक्ष्य की वकालत की गई है । और हमें इस परिप्रेक्ष्य को अपनी शैक्षिक प्रणाली में एकीकृत करने में सक्षम होना चाहिए। "

तेलंगाना राज्य उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. टी. पापी रेड्डी ने एमजीएनसीआरईआर से जुड़े होने के अपने अनुभव को साझा करते हुए सभा को संबोधित किया। उन्होंने यह महसूस किया कि छात्रों के लिए गाँवों का दौरा करना, वहाँ रहना, ग्रामीण समस्याओं का अध्ययन करना और यह देखें कि क्या प्रौद्योगिकी इन मुद्दों में से कुछ को हल करने में मदद कर सकती है या नहीं। अगले दिन तेलंगाना में विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की एक और बैठक थी उसमें उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि टीएससीएचई और एमजीएनसीआरईआर इसे उचित रूप से आगे ले जायेंगे ।

"यह अनिवार्य है कि हर पाठ्यक्रम में और बाद में सतत वृत्तिक विकास पाठ्यक्रम में एक व्यावहारिक घटक शामिल करना अनिवार्य है। शिक्षा से अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है और नई तालीम – अनुभवजन्य शिक्षा आगे बढ़ने का रास्ता है। मुख्य अतिथि श्री मदभूषी श्रीधर, पूर्व केंद्रीय सूचना आयुक्त ने उद्घाटन सत्र में बोलते हुए कहा कि एमजीएनसीआरईई द्वारा एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा ली गई है ।",

"गांधीजी के 3 एच (हेड, हार्ट और हैंड के माध्यम से सीखना) संयुक्त राष्ट्र संघ के शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के लर्निंग टू डू, लर्निंग टू बी, लर्निंग टू लर्निंग और लर्निंग टू लाइव टू गेदर के 4 स्तंभों से जुड़े हैं। और अब्राहम लिंकन के 4 एच- हेड, हार्ट, हैंड एंड हेल्थी बीइंग हैं । नई तालीम सिर्फ कृषि या चरखा सीखने के बारे में ही नहीं है बल्कि यह जीवन जीने के मौजूदा तरीके के संदर्भ में भी है।

आइए हम ठोस कार्रवाई बिंदुओं के साथ आते हैं जिन्हें पूरे देश में लागू किया जा सकता है और इस प्रकार एक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया जा सकता है। डॉ. टी. करुणाकरण, एग्रिंडस वर्धा के निदेशक और गुजरात चित्रकूट विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ने कहा कि विद्यालयों को रमणीय स्थल बनना चाहिए न कि कि वेरी लैंड्स और हूर्री लैंड्स।

विशिष्ट अतिथि बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद के कुलपति डॉ बी ए चोपडे ने कहा कि "शिक्षा और कार्य को अलग नहीं किया जा सकता है । और हम कार्य, अनुसंधान, योगदान, रचनात्मक तथा महत्वपूर्ण सोच कौशल के बिना नया ज्ञान हासिल नहीं कर सकते हैं। अनुभवजन्य अधिगम पर एमजीएनसीआरई के द्वारा लाया गया प्रकाशन - गांधीजी की नई तालीम प्रशंसनीय है और शिक्षण समुदाय का मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त जानकारी है। प्रत्येक शिक्षक को अपनी स्वयं की टिप्पणियों से नई अनुभवजन्य शिक्षण गतिविधियाँ बनानी होंगी। सामुदायिक जुड़ाव भी महत्वपूर्ण है - और गुरुकुल प्रणाली सबसे अच्छी है। शिक्षकों और छात्रों को एक दूसरे से 24x7 के संपर्क में होना चाहिए और कौशल निर्माण अनुभवजन्य शिक्षण का एक परिणाम है। विद्यालय के स्तर पर शिक्षा के सभी विभाग और उच्च शिक्षा स्तर के विद्यालयों को एक साथ काम करना चाहिए तथा अधिगम को साझा करना चाहिए।"

इससे पहले एमजीएनसीआरई के अध्यक्ष डॉ.डब्ल्यू. जी. प्रसन्ना कुमार ने अगस्त सभा का स्वागत किया और इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित किया कि 11 अप्रैल 2019 को कस्तूरबा गांधी की 150 वीं जयंती है, जिसे कस्तूरबा के रूप में मनाया जाएगा, जो कि गांधीजी के दर्शन और जीवन को आकार देने वाली थी। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को इस राष्ट्र के भविष्य को आकार देने का अवसर है। एमजीएनसीआरई के सदस्य सचिव श्री मुरली मनोहर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अध्यक्ष के टिपण्णी को दोहराया।

संपादक की टिप्पणी

"यह एमजीएनसीआरई के लिए एक अत्यधिक संतोषजनक वर्ष रहा है। हमने देश भर में स्वीकृति के असाधारण स्तर - गांधीजी की नई तालीम पर प्रयोग किया है। भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम वेंकैया नायडू ने 28 फरवरी को नई तालीम-अनुभवजन्य अधिगम पर हमारे दो दिवसीय गहन सम्मेलन में भाग लिया। अन्य विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों में तेलंगाना राज्य उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. टी. पापी रेड्डी, एग्रिंडस वर्धा के निदेशक और गुजरात चित्रकूट विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति महोदय डॉ. टी. करुणाकरण तथा श्री मदभूषी श्रीधर, पूर्व केंद्रीय सूचना आयुक्त शामिल थे । उन सभी ने एमजीएनसीआरई की नई तालीम पहल में विश्वास व्यक्त किया और वे सकारात्मक परिणामों के प्रति आशान्वित थे। हमारे निरंतर प्राध्यापक विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएं और गोलमेज बैठकों का आयोजन किया जाता है, जो नई तालीम एवं सामुदायिक अनुबंध को आगे बढ़ाने के लिए सारे कार्य हमारे अथक प्रयासों की गवाही देते हैं। अब हम अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर एमबीए पाठ्यक्रम विकसित कर रहे हैं। एमबीए पाठ्यचर्या पर हमारे एमजीएनसीआरई परिसर में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सु श्री अलमित्र पटेल के साथ चर्चा करना सौभाग्य की बात थी । ग्रामीण प्रबंधन कार्य प्रणालियों और सिद्धांतों पर एक पुस्तक को संकलित करने के लिए और ग्रामीण प्रबंधन अध्ययन के लिए हमारे पाठ्यक्रम सामग्री के हिस्से के रूप में केस अध्ययन के सूचनाओं के बारे में विस्तृत विवरण दिया गया है ।

ग्रामीण विकास को ग्रामीण क्षेत्रों के समावेशी विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें ग्रामीण व्यक्तियों, विशेष रूप से ग्रामीण गरीबों के जीवन की गुणवत्ता में स्थायी वृद्धि हो सकती है।

ग्रामीण प्रबंधन, प्रबंधन अध्ययन के ज्ञान को जोड़ता है और इसे ग्रामीण ढांचे में लागू करता है। ग्रामीण प्रबंधन एक ऐसी विशेषज्ञता है जो आपको समाज के उन क्षेत्रों के उत्थान और सुधार की दिशा में योगदान करने का मौका देती है, जहां विकास की रोशनी अभी तक नहीं पहुंच पाई है। इससे पहले केवल एक सीमित लोगों ने इस चुनौतीपूर्ण पाठ्यक्रम का विकल्प चुना था। लेकिन अब बहुत सारे छात्र ग्रामीण प्रबंधन के इस पाठ्यक्रम को चुन रहे हैं । क्योंकि वे अधिग्रहण और ग्रामीण क्षेत्र में प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए अपने कौशल का प्रदर्शन करना चाहते हैं । ग्रामीण आजीविका के विविधीकरण में तेजी लाने की तत्काल आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समुदायों के पास पर्याप्त साधन और अवसर हों जो व्यवहार्य और टिकाऊ हैं । ग्रामीण उद्यमिता इस मुद्दे को संबोधित कर सकती है और सामुदायिक संसाधनों के एकत्रीकरण के माध्यम से स्वरोजगार पैदा कर सकती है। ग्रामीण और शहरी विकास के बीच की खाई, स्वतंत्रता के बाद अपनाई गई विकासात्मक प्रक्रिया का एक प्रमुख मुद्दा है । और समावेशी विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस अंतर को एक प्रभावी तरीके से पूर्ण करना चाहिए। समस्या का एकमात्र समाधान है ग्रामीण क्षेत्र में उद्यमशीलता की गतिविधियों को विकसित करना।

विकास विमर्श पर (आईसीडीडी 2019) के 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेना यह एक विशेष अनुभव था, जो विचार विमर्शों के माध्यम से अवधारणा समर्थन और विकास के निष्पादन के लिए एक मंच था। ग्रामीण प्रबंधन पर प्रस्तुति अच्छी तरह से प्राप्त हुई थी। मातृभाषा में पढ़ना उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है । हमारा समाचार पत्र अब हिंदी भाषा में प्रकाशित हो रहा है और इसके पहले संस्करण का लोकार्पण महाराष्ट्र और तमिलनाडु राज्य के माननीय राज्यपाल श्री सी.विद्यासागर राव द्वारा किया गया था। यह खुशी की बात है कि हम इस वर्ष अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सफल रहे हैं और अपने निर्धारित लक्ष्यों से ऊपर उठे हैं। इस उपलब्धि की भावना के साथ हम अगले वित्तीय वर्ष में एक सुदूर दृष्टि और उद्देश्य के साथ आगे बढ़ते हैं।

डॉ. डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार
एमजीएनसीआरई, अध्यक्ष

ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, आगे बढ़ने का रास्ता है । 21 फरवरी को नई दिल्ली में एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (एएसएसओसीएचएएम) के राष्ट्रीय शिक्षा शिखर सम्मेलन और एड्-शाइन उत्कृष्टता पुरस्कार 2019, 'मेकिंग इंडिया ग्लोबल पावरहाउस: कैटेलसीइंग रिफॉर्म्स एंड इनोवेशन्स' विषय पर मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर ने शिक्षा पर बात की। उन्होंने कहा कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए और यह शिक्षा समग्र रूप से सर्वांगीण होनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि मैट्रिक्स की छात्रवृत्ति और शोध में वृद्धि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। ग्रामीण भारत में लचीलापन बनाने के लिए शिक्षा ही एकमात्र तरीका है। ग्रामीण भारत को सक्रिय और विकसित करने के इस मोड़ पर ग्रामीण प्रबंधन पर हमारी पाठ्यक्रम सामग्री को बाहर लाया जाना उपयुक्त है । ग्रामीण भारत की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति, ग्रामीण लोगों को व्यावसायिक गतिविधियों के साथ-साथ कृषि कार्यों को समर्थन देने । और कृषि कार्यों का समर्थन करने के लिए ही नहीं बल्कि बेहतर आजीविका के लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न करने और उन्हें प्रेरित करने के लिए कौशल विकास की मांग करती है। ग्रामीण विकास के विषय ने भारत में व्यापक महत्त्व प्राप्त किया है । क्योंकि लगभग 70% भारतीय जनसंख्या गांवों में निवास करती है। ग्रामीण विकास पूरी तरह से यह एक नई सोच नहीं है; यह वैदिक काल से ही भारत में मौजूद थी। अब विश्व स्तर पर यह महसूस किया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के बिना देश का विकास संभव नहीं है। ग्रामीण उद्यमिता, शहरी क्षेत्रों में उद्यमिता के विपरीत, चुनौतियों का एक अनूठा दस्ता लेकर आती है। इनमें संसाधनों तक सीमित पहुंच, बुनियादी ढांचे में अभाव और सहाय-सहकार संबंधित मुद्दे शामिल हैं । ग्रामीण उद्यमिता चुनौतियों और अवसरों से भरी है। भारत को इस चुनौती भरे कार्य से बाहर निकलने के लिए ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम और अधिक ग्रामीण प्रौद्योगिकी उद्भवन केंद्रों की पेशकश करने के लिए और अधिक महाविद्यालय खोलने के साथ इस चुनौती को पूरा करने की आवश्यकता है।

डॉ. भारत पाठक
एमजीएनसीआरई, उप-अध्यक्ष

(गवर्निंग काउंसिल की बैठक के दौरान बातचीत करते हुए)

Connect (कनेक्ट) – अब हिंदी में

एमजीएनसीआरई ने हिंदी भाषा में अपना मासिक समाचार पत्र कनेक्ट का लोकार्पण करके अपनी सिरोमनि में एक और पंख जोड़ा। ग्रामीण मग्नता पर एक नियम पुस्तिका का (हिंदी भाषा में) और इसके साथ-साथ ग्रामीण प्रबंधन पर केसलेट्स संकलन का भी लोकार्पण किया गया था) महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री. सी. विद्यासागर राव ने औपचारिक रूप से समाचार पत्र और पुस्तकों का लोकार्पण किया)

एमजीएनसीआरई के वरिष्ट प्राध्यापक डॉ. एन उपेंद्र रेड्डी ने पोडियम में एचओडी और एससीईआरटीएस को आमंत्रित किया और अपने-अपने राज्यों में नई तालीम गतिविधियों का जायजा लेने के लिए और अपने भविष्य की कार्रवाई के लिए भी आमंत्रित किया।

जहां नई तालीम-अनुभवजन्य शिक्षा पर विचार-विमर्श किया गया था। अपने राज्यों के आधार पर समूहों द्वारा गोलमेज का आयोजन किया गया था ।

प्रतिभागियों ने अपने राज्यों के प्रतिनिधियों को मिलाकर समूह बनाई। उन्हें नई तालीम के विचारों पर एक संक्षिप्त समूह चर्चा के लिए एमजीएनसीआरई के अध्यक्ष महोदय द्वारा निर्देशित किया गया था जिसे उनके पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जा सकता है। उन्होंने मार्च के महीने वर्ष 2019-20 में सभी साल के माध्यम से प्रतियोगिताओं, संगोष्टियों, कार्यशालाओं और एफडीपी का आयोजन करके नई तालीम को लागू करने के लिए व्यक्तिगत रूप से कार्य योजना तैयार की।)

गोलमेज सम्मेलन

1. लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 7 फरवरी - वीसी के साथ एस.पी.सिंह और प्राध्यापक
2. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, यूपी - 8 फरवरी
3. महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, गुजरात - प्रथम फरवरी
4. सु.श्री अलमित्रा पटेल के साथ बैठक .. अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर एमबीए पाठ्यक्रम पर चर्चा
5. कृष्णा विश्वविद्यालय - प्रथम फरवरी
6. दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय गोरखपुर यूपी - 13 फरवरी
7. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय - 8 फरवरी
8. चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय सिरसा, हरियाणा - 13 फरवरी

विकास विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीडी 2019)

रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन ने तीन दिवसीय "विकास विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीडी 2019)" का 8, 9 और 10 फरवरी को नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन (एनआईएन) में प्रायोजकों, अकादमिक भागीदारों तथा ज्ञान भागीदारों की अपनी टीम के साथ शुभारंभ किया।

विकास विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीडी 2019) के दौरान एमजीएनसीआरई के अध्यक्ष महोदय भारत के माननीय उपराष्ट्रपति के साथ बातचीत करते हुए)

"विकास विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीडी 2019)" का आयोजन इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेस यूनिवर्सिटी (ईएफएलयू), रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन (आरएफ आरएफ) और और अन्य संगठन के सहोयग से हैदराबाद में 10 फरवरी को आयोजित किया गया था । जिसमें पूर्ण सत्र -3 की शुरुआत एनएएसी, एमजीएनसीआरई, ईएफएलयू, एनआईएन, आईजीएनसीए द्वारा समानांतर विषय सत्रों के साथ हुई, ताकि विकास की प्रक्रिया में अपनी-अपनी भूमिकाओं पर जोर दिया जा सके। सत्र में सभी विद्वानों के बीच विचार विमर्श हुआ। 'विकास विमर्श पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीडीडी 2019)' विषय पर 10 फ़रवरी को एनआईएन के सभागार, हैदराबाद में समापन सत्र का आयोजन किया गया था । जिसमें सम्मानित महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री विद्यासागर राव के साथ-साथ एनआईटीआई आयोग के उप अध्यक्ष श्री. डॉ. राजीव कुमार उपस्थित थे ।

अंत्योदय - 10 फरवरी 2019

सत्र के मुख्य अतिथि: डॉ. डब्ल्यू जी. प्रसन्ना कुमार, एमजीएनसीआरई के अध्यक्ष एवं श्री भरत पाठक, एमजीएनसीआरई के उप अध्यक्ष

अंत्योदय, जीवन और आजीविका को बदलने वाले मापदंडों पर मापने योग्य प्रभावी परिणामों के लिए एक अभिसरण रूपरेखा है। यह ग्राम स्तर पर दक्षता और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए एक व्यापक और एकीकृत प्रणाली है। अंत्योदय के अर्थ के बारे में बताते हुए सत्र की शुरुआत, डॉ. डब्ल्यू. जी. प्रसन्ना कुमार के संबोधन से हुई थी । उन्होंने महत्वपूर्ण बात यह कही कि कि अंत्योदय जीवन और आजीविका को बदलने वाले मापदंडों पर औसत दर्जे के प्रभावी परिणामों के लिए एक अभिसरण ढांचा है। यह ग्राम स्तर पर दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए एक व्यापक और एकीकृत प्रणाली है। अंत्योदय का अर्थ है उत्थान बुनियादी से शुरू होना चाहिए तथा नियत पाठ्यक्रम एक और सभी को कवर करेगा।

डॉ.रेखा ने सत्र के लिए मंच तैयार किया।

डॉ. रेखा ने सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पक्ष के रूप से कहा कि "भारत का कल्याण गांवों की समृद्धि पर निर्भर करता है। ग्रामीण विकास अकेले के हाथों द्वारा नहीं किया जा सकता है। हमें मिलकर गांवों की आजीविका की समृद्धि और सुधार के लिए काम करना है।"

अभिप्राय और उद्देष्य:

1. . ग्रामीण आजीविका से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों का सामना करना।
2. ग्रामीण आजीविका के बीच अंतर को पाटने के लिए कार्रवाई अनुसंधान जोड़ें सिद्धांत और अभ्यास।
3. अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान दें।

प्रतिभागियों की सूची

डॉ बी डी त्रिपाठी, स्वतंत्र सलाहकार, हैदराबाद
विषय: ग्रामीण विकास में मानव संसाधन पहलू

डॉ. के श्रीनिवास राव, एसोसिएट प्रोफेसर, बीवी राजू इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, हैदराबाद
विषय: ग्रामीण प्रबंधन परिप्रेक्ष्य से क्षमता निर्माण

डॉ. गोवरी पिसोलकर देशपांडे, एसोसिएट प्रोफेसर, आरोरा पीजी कॉलेज, हैदराबाद
विषय: ग्रामीण विपणन

श्री रवि कुमार, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
विषय: गैप को पाटना, ई-सेवा के माध्यम से लोगों को सशक्त बनाना
कार्यान्वयन: ग्रामीण विकास के लिए नई संभावनाओं की खोज

श्री आकाश, हैदराबाद विश्वविद्यालय
विषय: शहर के पास के गांवों पर प्रभाव

सुश्री अक्षी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
विषय: ग्रामीण अवसंरचना और वित्तीय संस्थान

सुश्री ए संयुक्ता, ऊर्जा अध्ययन केंद्र, जेएनटीयूसीएचएच
विषय: बायोमास तकनीक और माइक्रोबियल ईंधन सेल (एमएफसी) प्रतिभागियों का उपयोग करके कचरे से ऊर्जा उत्पन्न करके एक गांव को बिजली देना

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, 28 जनवरी से 3 फरवरी

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में प्राध्यापक विकास कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पी.एम. पटेल उपस्थित थे । इस कार्क्रम के सहयोगी के रूप में प्रोफेसर डॉ आर.एस. पटेल, एचओडी, शिक्षा विभाग, डॉ. मनोज शास्त्री, संयोजक, एफडीपी, श्रीमती धरा, कार्यालय कर्मचारी और मिस हेतल, अनुसंधान सहायक. सुश्री सरवानी पांडे, अनुभवी प्राध्यापक, एकेडमिक एक्सपर्ट और विजय प्रताप सिंह, वरिष्ट प्राध्यापक ने एफडीपी में एमजीएनसीआरई का प्रतिनिधित्व किया। इस कार्यक्रम में नई तालीम पर एक परिचय दिया गया था । और थोड़ी देर बाद में करके सीखने की एक विस्तृत अवधारणा दी गई थी। डॉ. पी. एम. पटेल ने कार्यक्रम के महत्त्व के बारे में बात की । और उन्होंने कहा कि हम कक्षा में गांधीजी के नई तालीम को किस तरह लागू किया जा सकता हैं और परिपूर्ण होने के लिए कैसे कौशल प्राप्त कर सकते हैं । डॉ.आर.एस.पटेल, विभाग अध्यक्ष ने अपने भाषण में कहा कि समुदाय के मूल्य समाज से गायब हो रहे हैं । उन्होंने वास्तविक जीवन के अनुभवों का उदाहरण देते हुए कहा कि "गांधीजी सादगी में विश्वास करते थे और शैक्षणिक शिक्षा को अधिक महत्व देते थे। एक सभ्य घर के बराबर कोई विद्यालय नहीं हो सकता है और न ही एक गुणवान माता-पिता के बराबर कोई शिक्षक । इसलिए बच्चों की शिक्षा में परिवार की बढ़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।"

एफडीपी के कुछ परिणाम प्रासंगिक रूप से उपयुक्त थे, जो इस तरह हैं-छात्र और शिक्षक के लिए अनुबंध की गतिविधियाँ, शिक्षक शिक्षा में स्थानीय सामुदायिक जुड़ाव से जुड़े पहलुओं की पहचान करना । बच्चे / शिक्षार्थी के साथ पाठ को स्थानीय संदर्भ से जोड़ने की प्रक्रिया की पहचान करना । मध्य और उच्च विद्यालय के छात्रों के लिए प्रासंगिक रूप से उपयुक्तत गतिविधियों को तैयार करना और उन्हें प्रस्तुत करना। विद्यालयों के शिक्षा कार्यक्रमों और नीतियों की पहचान करना, जिनमें स्थानीय सामुदायिक जुड़ाव पहलू है या नहीं हैं की पहचाना करना । स्थानीय सामुदायिक सेवा में प्रभावी रूप से भाग लेना । कला के ढांचे की खोज करना । उद्यमशीलता के लिए शिल्प और आत्मनिर्भरता के लिए, विविध पृष्ठभूमि के लोगों का स्वागत करके वैश्विक नागरिकता का अभ्यास करना । और गंभीर रूप से प्रतिबिंबित करना । और किस तरह अनुभवात्मक अधिगम / कार्य पर दृष्टिकोण, शिक्षा छात्रों को आजीवन शिक्षार्थी बनाने में मदद करेगी।

सीसीएस विश्वविद्यालय, मेरठ, 30 जनवरी से 5 फरवरी तक

एफडीपी में, मुख्य अतिथि के रूप में सी.एच. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, कुलपति और प्रोफेसर एन के तनेजा विराजमान थे । एमजीएनसीआरई संसाधन व्यक्ति डॉ.अनिल कुमार दुबे, वरिष्ट प्राध्यापक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में 3 एच के संदर्भ में अनुभवात्मक अधिगम की अवधारणा पर चर्चा की गई। जिसमें 29 प्रतिभागी शामिल थे। प्रतिभागियों ने कहा कि पाठ्यक्रम शिक्षक और छात्रों के लिए एक मंच की तरह है। उन्होंने आगे कहा कि पाठ्यक्रम जीवन और जरूरतों से संबंधित होना चाहिए। यह पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए और इसे प्रतियोगिताओं के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए। जिसमें सिर, दिल तथा हाथ शामिल होना चाहिए । और इसके साथ-साथ भारतीय मूल्यों, संस्कृति तथा परंपराओं को आलिंगन करना चाहिए।

पलामुरु विश्वविद्यालय महबूबनगर में ग्रामीण समुदाय अनुबंध पर एफडीपी का उद्घाटन माननीय कुलपति, कुलसचिव, प्रधानाचार्य और पीयू के एनएसएस समन्वयक द्वारा किया गया था। क्षेत्र भ्रमण के एक हिस्से के रूप में, पलामुरु विश्वविद्यालय परिसर से लगभग 30 किमी दूर पर 'गुडीबांडा' गाँव'(टेम्पल रॉक) के दौरे का आयोजन किया गया था । उस गाँव में प्रतिभागियों के समूहों द्वारा अनुसूची के अनुसार सफलतापूर्वक सभी पीएलए गतिविधियों को अंजाम दिया गया। बाद में प्रतिभागियों ने समूहों में पैदल दौरा किया। कंदरू गाँव भी कवर किया गया था। वीआईपी संगठन के निदेशक डॉ. नागेंद्र स्वामी मुख्य अतिथि थे। उन्होंने ग्रामीण सामुदायिक जुड़ाव में शिक्षकों, छात्रों और एनएसएसपीओ की भूमिका के बारे में बात की। स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. नूरजहां और फार्मेसी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रभाकर रेड्डी ने समारोह में भाग लिया और गतिविधियों की प्रशंसा की । अपने सहयोगियों और छात्रों के साथ विचारों को साझा करके संस्थानों में अभ्यास करने का अनुरोध किया।

एफडीपी बिशुनपाड़ा सरकार कॉलेज ऑफ एजुकेशन आरामबाग डब्ल्यूबी 18 से 24 फरवरी तक

डॉ. पी.के. चंद्रा, कुलसचिव डब्ल्यूबीयूटीटीईपी एवं (सेवानिवृत्त), प्रो. डी. के. चक्रवर्ती एमजीएनसीआरई और डॉ. तारकनाथ सरकार प्रधानाचार्य बीपीएससीई और डॉ. शांतिनाथ सरकार, कल्याणी विश्वविद्यालय और अन्य गणमान्य व्यक्तियों और अधिकारियों ने एफडीपी के उद्घाटन का आयोजन किया। डॉ. तारकनाथ सरकार ने नई तालीम और इंसानों के जीवन में मूल्यों के महत्त्व के बारे में चर्चा की। नई तालीम एक सिद्धांत है जो बताता है कि ज्ञान और कार्य अविभाज्य हैं। गांधीजी की राय में, जो शिक्षक छात्रों से नहीं सीखता है, वह एक अच्छा शिक्षक नहीं है। डॉ.प्रणब कुमार चंदा ने हिंसा, असहिष्णुता और समाज से सभी प्रकार की बुराइयों को दूर करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी के विचारों के महत्त्व पर जोर दिया। प्रो डी. के. चक्रवर्ती ने इस एफडीपी के लक्ष्य एवं उद्देश्यों उजागर किया । और गांधीजी के सपनों के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने में एमएचआरडी की भूमिका के बारे में अपनी बात रखी । इसके साथ-साथ उन्हें विद्यालयों तथा शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में मुख्यधारा में लाने के बारे में बताया। डॉ. शांतिनाथ सरकार ने कहा कि गांधीजी के विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बहुत अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए उसे समुदाय से अलग नहीं की जा सकता। समग्र रूप से हमारे समाज / राष्ट्र के सतत विकास के लिए सामुदायिक सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने सर्वांगीण रूप से शिक्षा के दृष्टिकोण को बड़े परिप्रेक्ष्य में रेखांकित किया। श्री गोपी कांता दत्ता, भूतपूर्व प्रमुख मास्टर, गौरती हरदास संस्था (एच. एस.) और जिला हुगली डब्ल्यू.बी. के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े अन्य गणमान्य व्यक्ति । वर्तमान शिक्षा प्रणाली और वास्तविक आवश्यकता के बीच के अंतर को उजागर किया है, जो कि अनुभवात्मक अधिगम पद्धति के साथ सामना किया जा सकता है, केवल मूल्य के साथ उत्पादक तरीके से अनुभव के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

एफडीपी टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (टीआईएसएस), तुलजापुर, महाराष्ट्र, 18 फरवरी से 24 फरवरी

एमजीएनसीआरई के संसाधन व्यक्ति, प्रभाकर बानला ने एमजीएनसीआरई के लक्ष्य और दृष्टी पर मौखिकी प्रस्तुति की । डॉ. रमेश जारे एसोसिएट प्रोफेसर, टीआईएसएस, तुलजापुर परिसर द्वारा पीआरए कार्यविधियों

डॉ. अन्ना हजारे के साथ राले गाँव सिद्धि में

(सामाजिक कार्य अभ्यास) पर एक कक्ष सत्र का आयोजन किया गया। पीएलए कार्यविधियों को श्री. प्रभाकर बानला टीआईएसएस के द्वारा निपटाया गया था। डॉ. अंजलि कुलकर्णी ने कार्यक्षेत्र, अनुसंधान, दस्तावेजिकरण और सामाजिक कार्य के शिक्षण अधिगम में छात्रों के हस्तक्षेप पर पीपीटी प्रस्तुति दी । प्रतिभागियों ने प्रस्तुतियों पर चर्चा की और इसे क्षेत्र कार्य के दौरे में उपयोगी बताया गया । बारुल गाँव की यात्रा अनुभवात्मक थी। गाँव के समुदाय अध्यक्ष श्री. सुधीर ने गाँव की सफलता की कहानी "गाँव में नौकरी देने की स्थिति से लेकर नौकरी उपलब्ध कराने की स्थिति" तक साझा की।

तीसरे दिन, हाईवेयर बज़ार पर एक लघु फिल्म दिखाई गई, जो भारत के एक आदर्श गाँवों की है । एक समय में यह सूखा प्रभावित क्षेत्र था। उस गाँव के सरपंच श्रीपोपतराव पवार के सक्षम और प्रतिबद्ध सामाजिक कार्यकर्ता के नेतृत्व में वाटरशेड और वाटर हार्वेस्टिंग के तरीकों के कारण, यह गाँव भारत का एक उत्कृष्ट गाँव बन गया हैं । टीआईएसएस मुंबई के प्रो. बिपिन जोजो ने "दलित और आदिवासी समुदायों के साथ सामाजिक कार्य" पर संबोधित किया। उन्होंने महाराष्ट्र के सुदूर जिलों में अपने व्यक्तिगत कार्य और अनुभव के साथ इस विषय को विस्तार से बताया। कई प्रतिभागियों ने समीक्षा सत्र में भाग लिया। टीआईएसएस तुलजापुर के प्रोफेसर रोहित जैन ने "भारतीय संदर्भ के साथ सामाजिक कार्य विधियों की अवधारणा" पर बात की। इस सत्र में उन्होंने केस कार्य, समूह कार्य और सामुदायिक संगठन पर जोर दिया। उन्होंने वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के संदर्भ में विषयवस्तु पर चर्चा की।

एफडीपी जादवपुर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल 4 से 10 फरवरी तक

डॉ.ललित ललितव मोहाकुद एफडीपी में कार्यक्रम समन्वयक थे। डॉ. दीपक मुखर्जी, पूर्व रीडर, नृविज्ञान विभाग, नरसिंह दत्ता कॉलेज, हावड़ा ने कुर्सी संभाली। उन्होंने कार्यशाला के लिए संवादात्मक की आवश्यकता और अंतर्विध्यावार्थी विषय के महत्त्व को केंद्र में रखकर अपनी बात रखी । तीसरे दिन का उद्घाटन सत्र पश्चिम मिदनापुर के वन बेल्ट में आदिवासी लोगों पर एक दिलचस्प व्याख्यान के साथ जादवपुर विश्वविद्यालय के माननीय डॉ. बिष्णुपद नंदा, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष ने शुरू किया । उन्होंने नई तालीम और अनुभवात्मक शिक्षा पर एक बात की। उन्होंने ग्रामीण मग्नता (व्यस्तता) कार्यक्रमों में अपने वास्तविक जीवन के अनुभवों को साझा किया। रिसोर्स पर्सन प्रोफेसर राबिनारायण पटनायक ने 'कैसे प्रबंधन कौशल और प्रक्रियाओं में अनुभवात्मक शिक्षण शामिल है। इस पर पीपीटी प्रदर्शन बनाया । उन्होंने कहा कि अनुभवात्मक अधिगम एक व्यवस्थित अधिगम की प्रक्रिया है। उन्होंने कहा कि अनुभवात्मक अधिगम एक व्यवस्थित सीखने की प्रक्रिया है। उन्होंने कौशल को 'कुछ ऐसा है जो मारता है' के रूप में समझाया। प्रोफेसर अंतरा मित्रा, शिक्षा विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय और चौथे दिन डॉ. अमूल्य कुमार आचार्य, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष को पनिहाटी महाविद्यालय में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था उन्होंने कहा "ग्रामीण मग्नता कार्यक्रम के माध्यम से हम समझ सकते हैं देहाती आकर्षण। ग्रामीण लोगों के पास स्वदेशी ज्ञान है ।".

एफडीपी एनएसएस पीओ के लिए एमजीयू नलगोंडा में सामुदायिक अनुबंध और ग्रामीण मग्नता

21 फरवरी को एनएसएस पीओ के लिए एफडीपी के उद्घाटन के अवसर पर कुलसचिव एमजीयू द्वारा वृक्षारोपण करते हुए

एमटीडीपी एससीईआरटी, भोपाल, मध्य प्रदेश 11 वीं से 15 फरवरी

एमटीडीपी 48 प्रतिभागियों (डीआईईटी प्राध्यापक) के साथ आरसीवीपी नोरोन्हा अकादमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट में आयोजित की गई थी। मुख्य अतिथि के रूप में एससीईआरटी, मध्य प्रदेश के अपर निदेशक श्री ओ. एल. मंडलोई थे। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री. उस्मान खान और श्रीमती प्रमिला सिंह शामिल थे। लेनदेन कार्यप्रणाली व्यक्तिगत काम पर थी, जहां प्रतिभागियों ने काम और शिक्षा पर अपना दृष्टिकोण साझा किया ।

प्रतिभागियों ने महसूस किया कि नई तालीम पाठ्यक्रम पारस्परिक कौशल बनाने में मदद करता है। उन्हें लगा कि यह प्रशिक्षण अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों से बिल्कुल अलग है क्योंकि इसमें वे एक-दूसरे से सीखने की कोशिश कर रहे थे । प्रतिभागियों ने साझा किया कि वे अपने छात्रों की शक्तियों को सूचीबद्ध करेंगे और उन्हें उनके डीआईईटी में विभिन्न घटनाओं के लिए उचित रूप से उपयोग करेंगे।

श्री ओ.एल. मंडलोई, एससीईआरटी, भोपाल के अपर निदेशक और निदेशक सीमैट ट्रेनिंग सेंटर, भोपाल

श्री उस्मान खान, एससीईआरटी के प्रशिक्षण समन्वयक, भोपाल

प्रतिभागियों की व्यक्तिगत गतिविधि

समूह प्रस्तुति

कार्यशालाएं कृष्णा विश्वविद्यालय, मछलीपट्टनम, आंध्र प्रदेश - 18 फरवरी

कृष्णा विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन डॉ.बी.धनवंतरी आचार्य, एसपीएचएम कॉलेज के अध्यक्ष और डॉ. शैलजा, अध्यक्ष बीओएस, शिक्षा बोर्ड के द्वारा किया गया । डॉ. धनवंतरी आचार्य ने गांधीजी के विचार और वे कैसे महात्मा बन गए, इस विषय पर बात की । उन्होंने इस पहल के लिए एमजीएनसीआरई को धन्यवाद दिया और प्रतिभागियों को इस कार्यशाला का उपयोग करने की सलाह दी। कार्यशाला में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया था । कार्यशाला में पुस्तक समीक्षा के लिए समूह बनाए गए थे । और प्रत्येक समूह को एक अध्याय आवंटित किया गया था। इसके बाद, प्रत्येक समूह ने अपनी प्रस्तुति दी। और कार्यशाला के अंत में डॉ. शैलजा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडु - 6 फरवरी

डॉ.मणिवसाकरण मुख्य प्रभारी ने (26) प्रतिभागियों का औपचारिक स्वागत किया और सामाजिक कार्य सदस्यों, बीओएस और एमजीएनसीआरई के साथ सहयोग की सराहना की। उन्होंने प्रतिभागियों से कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेने और सामुदायिक सहभागिता पाठ्यक्रम के साथ आने का आग्रह किया कि जिससे राज्य के छात्रों को लाभ होगा। उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्षमता, आत्मविश्वास निर्माण, सहिष्णुता और कौशल के इर्द-गिर्द घूमने वाली ग्रामीण सामुदायिक व्यस्तता का भी स्वागत किया। प्राध्यापक विकास कार्यक्रमों के संचालन पर भी चर्चा हुई ताकि पाठ्यक्रम में सामुदायिक सहभागिता को एकीकृत किया जा सके एमजीएनसीआरई संसाधन व्यक्ति, नागा वैष्णवी ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों और एक दिवसीय कार्यशाला को साझा किया।

काशी विद्यापीठ वाराणसी 11 फरवरी

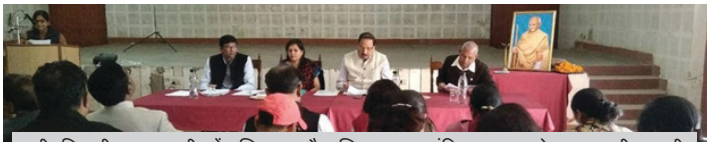

काशी विद्यापीठ वाराणसी में, शिक्षक और शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन - ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध पर कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रोफेसर टी.एन. सिंह और संकाय अध्यक्ष, कानून एवं एनएसएस, सामाजिक कार्य के प्राध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष

गुजरात में शैक्षिक अनुसंधान परिषद की एक दिवसीय कार्यशाला और प्रशिक्षण, गांधीनगर गुजरात - 2 फरवरी

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद उच्च शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शाकर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, बंद कॉलोनी, आदर्श नगर, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004.
तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@ncri.in, वेबसाइट: www.mgncre.in
संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी और शिवराम जी, श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित